भाकृअनुप-भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान द्वारा भारतीय वन प्रशिक्षणार्थियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित

18 - 29 जुलाई, 2022, देहरादून

भाकृअनुप-भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून द्वारा दिनांक 18 - 29 जुलाई, 2022 तक भारतीय वन प्रशिक्षणार्थियों हेतु "मृदा एवं जल संरक्षण और जलागम प्रबंधन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का समापन समारोह का आयोजन 29 जुलाई, 2022 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून के सभागार में किया गया।

समापन समारोह में, श्री सतपाल महाराज, कैबिनेट मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर, श्री सतपाल महाराज ने कहा कि मिट्टी और जल जीवन के मूल आधार है। अतः इनका टिकाऊ प्रबंधन एवं संरक्षण मानव कल्याण हेतु अपरिहार्य रहा है, यहां तक की इसकी चर्चा हमारे विभिन्न ग्रंथों में भी की गयी है। उन्होंने अपने संबोधन में वनीकरण के साथ-साथ मृदा एवं जल संरक्षण पर बल दिया जिससे हम भविष्य में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का दृढ़ता से सामना कर सकेंगें।

इस अवसर पर, डॉ. एम. मधु, निदेशक, भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून ने अपने संबोधन में मृदा एवं जल संरक्षण में वन प्रशिक्षणार्थियों की भूमिका एवं महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षणार्थियों को आने वाले समय में अधिक संख्या में फलदार पेड़ लगाने होंगे, जिससे वन्य जीवों को उनके अपने ही स्थान पर भोजन मिल सके तथा कृषि में इनके दुष्प्रभाव को कम किया जा सके।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी के निदेशक, श्री भरत ज्योति ने भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून द्वारा आयोजित किये गये 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण द्वार प्रशिक्षणार्थियों को अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

डॉ. धर्मवीर सिंह, समन्वयक, प्रशिक्षण कार्यक्रम ने कहा कि प्रशिक्षणार्थियों के सुझावों को देखते हुए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को और ज्यादा उपयोगी बनाया जायेगा।

समापन समारोह में उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को अत्यंत उपयोगी बताया।

इस अवसर पर, भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान से डॉ. चरण सिंह, डॉ. राजेश कौशल, डॉ. गोपाल कुमार, ई. एस. एस. श्रीमाली, डॉ. एम. शंकर, डॉ. रमनजीत सिंह, डॉ. इंदु रावत, डॉ. उदय मंडल एवं डॉ. तृषा राय भी उपस्थित थे।

(स्रोतः भाकृअनुप- भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून)